Volume-9, No. 1 Feb.-2022, pp. Hin.25-27

श्री विष्णु **नागर जी की कहानियों में कामगर श्रमिकों के जीवन संघर्ष का चित्रण**

डॉ. रंजना, प्राचार्य
भदावर विद्या मन्दिर कालिज आगरा रोड
बाह उत्तर–प्रदेश भारत

सार

श्री विष्णु नागर मध्य प्रदेश के शाजापुर नामक कस्बे में बी.ए. तक शिक्षा–दीक्षा लेने के उपरांत दिल्ली आए और पत्रकारिता को अपनी आजीविका चुना उन्होंने लिखा है कि "दिल्ली आया तो संयोग रहा कि पहले ही दिन अपनी खासी खराब सी कविताओं की डायरी लेकर रघुवीर सहाय के साथ बहादुर शाह जफर मार्ग में 'दिनमान' के कार्यालय में मिला।.... दिनमान में लिखने की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। करीब 4 साल तक दिल्ली में फ़िलोंसिग के दौरान दिनमान ही मेरी आय का मुख्य स्रोत बना.....।"

नागर जी की शिक्षा ग्रहण करने के दौरान ही साहित्य में अभिरुचि पैदा हो गई थी। आस–पास के परिवेश से प्रभावित होकर उन्होंने अनेक रचनाएं लिखी। वे अपने अध्ययन काल से ही मुक्तिबोध की रचनाओं से प्रभावित रहे। विष्णु नागर जी की कहानियों में सांकेतिकता और अर्थवत्ता मिलती है। कविता किसी लय और बिम्बधर्मिता से भी आप की कहानियां ओतप्रोत हैं। आज के समाज में एक श्रमिक की स्थिति बड़ी दयनीय एवं विडंबनायुक्त है। वह रात दिन मेहनत–मशक्कत करके भी अपने परिवार की इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता, दिन–रात करने के बाद भी उसके परिवार की इच्छाओं का दमन ही होता है। एक श्रमिक अपना सारा जीवन इस समाज की सेवा में लगा देता है, मगर उसे प्रत्युत्तर में क्या मिलता है? आप की कहानी 'दर्जी' में ऐसे ही कामगर श्रमिक के जीवन की मानसिकता का आंकलन हुआ है। विष्णु नागर की कहानी 'पेंट' में ऐसा लग सकता है, कि यहां विवाद पेंट खरीद लेने और फिर खरीद कर पहन सकने की दुविधा का है, परंतु इस कहानी में विवाद पेंट का नहीं उन परिस्थितियों का, उन दवाबों का है, जहां एक व्यक्ति की चेतना टकरा रही है। 'पेंट' कहानी में मामला पेंट का नहीं, बल्कि बेहतर जीवन स्थिति की आशा का है। काम कर श्रमिकों का जीवन चूँकि मिट्टी से जुड़ा होता है, उनका सारा श्रम, उनकी समस्त जीविकाऐं पृथ्वी से होती हैं, कहीं कृषक का जीवन, कहीं निर्माण का जीवन, कहीं मार्ग बनाने में उनकी श्रमशील साधना यही उनका सब कुछ है। आधुनिक पूंजीवादी लोगों की सुख–सुविधाओं से वे सर्वदा वंचित रहते हैं। आधुनिक विज्ञान और आधुनिक तकनीक के उपकरण उनके जीवन में स्वप्न के समान होते हैं। उन्हें उनका कोई लाभ नहीं मिल पाता। आधुनिक विज्ञान की इस दौड़ में भी इस प्रकार पीछे हैं, कि उनका उपभोग एक स्वर्णिम कल्पना है, जिस कल्पना के स्वर्णिम पंख लगाकर वे आकाश में तो उड़ते हैं अंततोगत्वा उन्हें पृथ्वी पर ही गिरना पड़ता है। नागर जी की कहानियों में ऐसे लोगों का चित्रण है जो जीवन को पूरी मेहनत मशक्कत के बावजूद बड़ी किल्लत और कठिनाई से जीते हैं, जिनके जीवन के हिस्से में अभाव, दिक्कतें और परेशानियां ही अधिक हैं। ऐसी जीवन स्थितियों के यथार्थपूर्ण चित्रण के साथ–साथ नागर जी की कहानियां जीवन के महत्व को दर्शाती हैं। मानवीय जीवन को सबसे अधिक गरिमावान और सृजनशील मानकर जगत और जिंदगी की गतिशीलता, गतिविधि, रवानगी और प्रकृति का जीवंत वर्णन कहानियों में उतारने का प्रयास कहानीकार करता है। नागर जी की कहानियां अपने आप में जीवन के इसी रूप का चित्रण करती हैं। दर्जी, पेंट, वह, दुश्मन, सत्य– असत्य, घोड़े ने घास से यारी की, ईश्वर की कहानियाँ और बजीरे का बच्चा कहानियों में उन पहलुओं और परिस्थितियों को भी उघाड़ा गया है, जिसके कारण एक आम आदमी का जीना दुर्लभ हो चुका है।

मुख्य शब्द– कामगर, मशक्कत, सांकेतिकता, मानसिकता, अर्थवत्ता, बिंबधर्मिता, गतिशीलता।

प्रस्तावना–

विष्णु नागर के साहित्यिक संस्कारों को समृद्ध करने का बहुत कुछ श्रेय उनके अध्यापक डॉ दुर्गाप्रसाद झाला को है, जो उन्हें पढ़ने के लिए ज्ञानोदय, आलोचना और कल्पना जैसी साहित्यिक पत्रिकाएं दिया करते थे। मुझ पर लोक–कथाओं का गहरा असर है। ख्वाजा नसरुद्दीन की कहानियां मुझे बहुत मोहती हैं। मुझ पर इस धरती की हवा, पानी, गंध, स्पर्श का असर है। एक रात मैंने माथेरान के आकाश में इतने तारे देखे, जितने मैंने कभी नहीं देखे थे और मैं मंत्रमुग्ध हो गया था, उसका भी असर कहीं मुझ पर होगा। मेरी गरीबी के दिनों का असर होगा, मेरे

कस्बे का असर होगा। मुझ पर समुद्र और नदियों का असर होगा, जिनके किनारे में खूब बैठा हूं। मेरी मानसिक रचनात्मक बुनावट में अपने समाज को समझने और विश्लेषित करने की कोशिश करना सबसे प्राथमिक तत्व है।

विष्णु नागर की कहानियां सैद्धांतिक होते हुए मध्यमवर्गीय जीवन के अनुभव संचित यथार्थ का तीखा आलोचनात्मक मूल्यांकन करती हैं। आपकी कहानियों में कामगर श्रमिकों के जीवन संघर्ष के चित्रण के साथ–साथ समाज के इस विषम अभीष्ट को बदलने की आकांक्षा भी है। यही नहीं इनकी कहानियां उस आदर्श की प्रतीति जगाती हैं, जो परिवर्तन का उद्देश्य है। सरहपाद हों या खुसरो, कबीर हों या तुलसी, आचार्य द्विवेदी हों या भारतेंदु, पंत हों या निराला, केदार हों या नागार्जुन सभी ने समाज के इस यथार्थ को चित्रित किया है। सब ने अपने काव्य के माध्यम से समाज के खोखलेपन, रूढ़ियों, आडंबरों, लघु मानव की पीड़ा, कराह और दर्द को अभिव्यक्त किया है।

कामगर श्रमिकों का पक्ष लेते हुए नागर जी ने सुंदर चित्रण किया है–

"मैंने पृथ्वी पर पाप की एक बूंद गिराई
क्या, पृथ्वी पर, पाप की एक बूंद
ठंडे, पारदर्शी, पानी की एक बूंद की तरह
दीखती है? मैं बुदबुदाता हूं, समुद्र में,
एक बूंद, एक बूंद है
और धरती शिवाय समुद्र के और क्या है।" 1.

श्रमिकों की दयनीय स्थिति को पूँजी का एकत्रीकरण निस्तर बनाए रखने में योगदान करता है, जबकि हर श्रमिक अपनी इस गरीबी की परंपरा के रूप में अपनी आने वाली संतति को नहीं देना चाहता, उसके अंदर यह भावना होती है कि जिस निम्नता का जीवन हमने जिया उसे मेरा बच्चा ना जिए। हर पिता की त्याग की शर्त पर अथवा अपने मिट जाने की शर्त पर भी वह बच्चे को अपने जैसा नहीं होने देना चाहता।

कामगर श्रमिकों के जीवन संघर्ष का चित्रण–

आज के समाज में एक श्रमिक की स्थिति बड़ी दयनीय एवं विडंबनायुक्त है, वह रात–दिन मेहनत–मशक्कत करके भी अपने परिवार की इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता, दिन–रात करने के बाद भी उसके परिवार की इच्छाओं का दमन ही होता है। एक श्रमिक अपना सारा जीवन इस समाज की सेवा में लगा देता है मगर उसे प्रत्युत्तर में क्या मिलता है? श्रमिक के जीवन की मानसिकता का आकलन हुआ है "दूसरों के कपड़े सीते–सीते दर्जी तंग आ चुका था। वह अब अपने कपड़े सींना चाहता था। वह चाहता था कि अपने लिए एक बढ़िया कुर्ता–पाजामा, एक पेंट–शर्ट, एक सफारी, एक थ्री पीस सींऐ। वह पत्नी के लिए एक गाउन सीना चाहता था। वह अपने दो बेटों और एक बेटी के लिए कम–से–कम आधा–आधा दर्जन कपड़े सीना चाहता था। उसकी आंखों के सामने पूरा नक्शा था। उसने कपड़ों के रंग तय कर लिए थे, उनकी जेबें, उनकी कॉलर, उनकी बटने तक निश्चित कर ली थी।.... एक खुश, महकता, टैक्सी पर सफर करता परिवार उसकी कल्पना में इतना जीवंत था कि वास्तविकता लगता था, परंतु उसका यह स्वप्न सिर्फ स्वप्न बनकर ही रह गया। उसने अपनी दुकान पर दूसरों के कपड़े सिलने बंद कर दिए। वह अपने और अपने परिवार के कपड़े सिलने के विषय में सोचता ही रहा, लेकिन उसके अपने और परिवार के कपड़े नहीं सिलते। सिलते भी कहां से? पैसे कहां थे? जब दुकान चलती थी, तब अपने कपड़े नहीं चलते थे, तो अब कहां से चलते? कपड़ा कहां से आता, कौन देता?" 2.

'दर्जी' कहानी हमें बताती है कि कामगर श्रमिक की स्थिति यही है, उसके सपने, उसकी इच्छाएं परिस्थितियां की वजह से धूमिल हो जाती हैं। यदि श्रमिक एक दिन कार्य न करें तो उसके घर चूल्हा नहीं जलता। ऐसी ही स्थिति का चित्रण लेखक ने अपनी कहानी 'दर्जी' में किया है–

"वह जब भी घर से चलने को होता, पत्नी प्यार से उसे समझाती कहती, आज जरूर कुछ करना दो–चार रुपए कमा लेना, दो–चार मैं कमा लेती हूँ, दो–चार तुम कमा लोगे तो पेट में रोटी तो चली जाएगी। लोग कब तक उधार देंगे। बच्चों को कब तक भूखा मारे? यह कहते–कहते वह अक्सर रो देती।" 3.

लेखक ने 'बजीरे का बच्चा' कहानी में भी कामगर श्रमिक के जीवन का चित्रण किया है। वजीरा रद्दी वाला होता है, ईश्वर उसे मारना चाहता है। एक गरीब की जिंदगी के महत्व की ओर लेखक उन्मुख होता है–

"फिर वजीरे था भी रद्दी वाला। उसका बच्चा मरे, यह सहज संभाव्य है।" 4

हमारे समाज में श्रमिक की हालत इतनी दयनीय होती है कि उनके बच्चों को दूध भी कभी–कभी ही मिलता है, लेखक ने इस स्थिति का सजीव चित्रण किया है– "ईश्वर ने यह सोचकर वजीरे के बच्चे पर निगाह डाली, सावला, सुंदर, भोला चेहरा, बड़ी–बड़ी काली आंखें, मुस्कुराहट में भी एक संकोच, कमजोरी मगर चंगा हो जाने की खुशी, उसे दूध का इंतजार जो स्टोर पर चढ़ा था। वह उन थोड़े बच्चों में था,

जिन्हें दूध अच्छा लगता है, क्योंकि उसे दूध भी कभी बीमार हो जाने पर ही मिलता था। उसे जब भी दूध मिलता था वह छोटे–छोटे घूंट भरता था ताकि देर तक उसका स्वाद मुंह में रहे। दूध की गर्माहट उसकी जुबान को अच्छी लगती थी, दूध का स्वाभाविक मीठापन और ऊपर से चीनी उसे भाता थी। वह उसी दूध का इंतजार कर रहा था।" 5.

विष्णु नागर की 'पेंट' कहानी भी कामगर श्रमिक की आर्थिक एवं मनोस्थिति का आकलन करते हुए लिखी गई है। श्रमिक यदि अभावग्रस्त जीवन में किसी भी तरह एक वस्तु जो डाले तो दूसरे का अभाव दिखने लगता है। लेखक ने इसका सटीक चित्रण किया है–

"एक बार उसके पास जेब खर्च से ज्यादा पैसे आ गए। उसने हिम्मत कर ली, एक अच्छी–सी पेंट सिलवानें की।" 6.

"उसने पेंट पहनने का इरादा बनाया तो लगा पैंट तो नई है, पर कमीज़ पुरानी, चप्पल का हाल तो बेहद खराब है। शर्ट और चप्पल नई हो तो पेंट पहनने का भी मजा है। कई दिनों तक वह वही सोचता रहा कि तीनों नई चीजों का जुगाड़ कैसे बैठाया जाए। उसने किसी तरह खाने–पीने का खर्च कम कर के पहले नई चप्पल का इंतजाम किया, फिर नई शर्ट के लिए बचत अभियान शुरू हुआ लेकिन इस बीच पुरानी चप्पल की हालत इतनी खस्ता हो चुकी थी कि उसे मोची के पास ले जाना भी अपनी हंसी उड़ावना था। इसलिए नई शर्ट आई नहीं और नई चप्पल पहननी पड़ी, लिहाजा सारी योजना का कबाड़ा हो गया।" 7

नागर जी की कहानी 'वह' व्यंगपूर्ण ढंग से उन लोगों की कहानी है जो जीवन को अभाव से जीने के बाद भी कुछ नहीं पाते–

"वह अपने जीवन पर पछताना चाहता था। पछताकर जीवन के बारे में कुछ नया करना चाहता था, लेकिन क्या धूल के एक कण को मौका मिलता है भला इसका।" 8

हमारे समाज में श्रमिक की स्थिति बड़ी दयनीय है, वह अपनी रोजी–रोटी चलाने में ही पूरी जिंदगी व्यतीत कर देता है। उसे ना तो संविधान का पता है और ना ही अपने अधिकारों का, उसका जीवन तो सिर्फ संघर्ष के लिए ही बना है। वह कभी एहसास ही नहीं कर पाता कि खाने के अतिरिक्त भी कोई जीवन है, यदि वह इस विषय में सोचता है तो उसे भूखा ही सोना पड़ता है।

श्रमिक की इसी स्थिति का लेखक ने सजीव चित्रण किया है –

"उसे भारतीय संविधान में प्रदत्त प्रत्येक अधिकार प्राप्त था, मगर उसकी ट्रेजेडी ऐसी थी कि वह सुबह से शाम तक मजदूरी करके इतना ज्यादा थक जाता था कि उसने कभी अपने किसी अधिकार का उपयोग नहीं किया था।" 9.

"और अब वह अपने घर लौट रहा था, भूखा और प्यासा और मन ही मन मुस्कुराता कि आज उसे भूखा भले रहना पड़ा हो मगर उसने अपने संविधान प्रदत्त अधिकार का पूरा–पूरा उपयोग कर लिया है और अब वह पूर्ण भारतीय नागरिक है।" 10.

उपसंहार–

विष्णु नागर का साहित्य प्रयोग धर्मी है। वे परंपरा से हटकर लिखते हैं, उनमें समकालीन यथार्थ सोद्देश्य तरीके से उभर कर सामने आता है। कहानी में कविता कहना विष्णु नागर की सबसे बड़ी विशेषता है। वे और उनके पात्र मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए चारों ओर के निर्मम परिवेश से निरंतर संघर्ष करते दिखाई देते हैं।

नागर जी का साहित्य पाठक को न सिर्फ सचेत करता है बल्कि सक्रिय भी करता है। इन श्रमिकों के जीवन में कदाचित ही कोई ऐसा दिन हो जब उनके परिवार में अच्छा खाना मिले, सुख शांति मिले और अपने बच्चों से तनाव रहित रहकर जीवन मिल सके। आपने शोषित और उपेक्षित एवं वंचित निम्न वर्ग को स्वाभिमान और बेहतर जीवन का रास्ता दिखाया हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. विष्णु नागर, संसार बदल जाएगा, संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, 1985, एक बूंद, एक बूंद है, पृष्ट– 26
2. दर्जी, कुछ दूर, पृष्ट –14
3. दर्जी, कुछ दूर पृष्ट – 18
4. वजीरे का बच्चा, कुछ दूर, पृष्ट – 45
5. वजीरे का बच्चा, कुछ दूर, पृष्ट –12
6. पेंट, आदमी की मुश्किल, पृष्ट – 47
7. पेंट, आदमी की मुश्किल, 9–10
8. वह, कुछ दूर, पृष्ट – 30
9. पूर्ण भारतीय नागरिक, आख्यान, पृष्ट – 77
10. पूर्ण भारतीय नागरिक, आख्यान, पृष्ट –77